किसी के बैंक में नहीं पड़े हैं मुसलमान मतदाता

श्रेयस सरदेसाई

अनुवाद : कमल नयन चौबे

भारत में मुसलमान राजनीति के बारे में हुए अध्ययनों को मुख्य रूप से दो बड़ी श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। पहली श्रेणी उन अध्ययनों की है जो विधायी निकायों में मुसलमानों के अल्प-प्रतिनिधित्व का विश्लेषण करती हैं। दूसरी श्रेणी के अध्ययन ने चुनावों के दौरान मुसलमानों के मतदान-व्यवहार पर ध्यान केंद्रित किया है। पिछले दिनों विधायिकायों में मुसलमानों की उम्मीदवारी, नामांकन और कम प्रतिनिधित्व के सवाल पर काफ़ी काम हुआ है; लेकिन दूसरी श्रेणी अर्थात् मुसलमानों के मतदान-व्यवहार पर ज़्यादा प्रकाश नहीं डाला गया है। ख़ासतौर पर एक निश्चित समयावधि के बाद इसमें होने वाले बदलावों या निरंतरता को कोई व्यवस्थित अध्ययन नहीं मिलता। इस संदर्भ में 2009 चुनावों के बाद संजीर आलम द्वारा लिखे गये लेख को छोड़ कर लोकसभा चुनावों में मुसलमानों के मतदान-व्यवहार के प्रारूप पर कोई गहन और विस्तृत अध्ययन उपलब्ध नहीं है। इस लेख में पिछले कई वर्षों के दौरान विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.) की लोकनीति संस्था द्वारा किये गये राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन के आँकड़ों के ज़रिये मतदान-व्यवहार के विभिन्न आयामों (विभिन्न राज्यों के पैटर्न, जाति, उम्र, जेण्डर, वर्ग आदि) का अध्ययन करते हुए इस कमी की भरपाई का प्रयास किया गया है।

यह एक अहम सवाल है कि 2014 के लोकसभा चुनावों में देश के सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय अर्थात् मुसलमानों के वोट किसे मिलेंगे? यह एक ऐसा प्रश्न है जो हर राष्ट्रीय चुनावा के वक़्त अकादमिक और मीडिया जगत की गहरी रुचि और विश्लेषण का विषय रहा है। ख़ास तौर पर पिछले दो दशकों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उभार के बाद इस सवाल पर ज़्यादा गहराई से विचार किया जाने लगा है। भाजपा ही वह पार्टी है जिसके नेताओं ने रामजन्मभूमि आंदोलन का नेतृत्व किया जिसकी सर्वोच्च परिणति अयोध्या में बाबरी मसजिद के ध्वंस में सामने आयी। इस घटना के बाद पूरे देश में बड़े पैमाने पर दंगे हुए। मुसलमानों को हिंदुत्व की इस राजनीति के दुष्प्रभावों का सामना करना पड़ा है और कई जगहों पर उन्हें हिंदुत्ववादी संगठनों की हिंसा भी झेलनी पड़ी है। इसी कारण पिछले दो दशकों में हुए चुनावों में उन्होंने दूसरे किसी भी समुदाय की तुलना में ज़्यादा सोच-विचार के साथ अपने मताधिकार का प्रयोग किया है। किसी चुनाव दौरान एक औसत मुसलमान फिर सबसे अच्छे

12_shreyas_Layout 1 5/1/2014 6:07 PM Page 148

उम्मीदवार और पार्टी पर ही ध्यान नहीं देता, बल्कि इस बात पर भी ग़ौर करता है कि कौन-सा उम्मीदवार भाजपा का सबसे अच्छी तरह सामना कर सकता है क्योंकि उसकी निगाह में भाजपा ने उसकी सुरक्षा और हितों के लिए ख़तरा पैदा किया है। एक अर्थ में असुरक्षा और भय से पैदा हुई व्यावहारिकता मुसलमान मतदाताओं की मुख्य रणनीति रही है।

कांग्रेस उत्तर, मध्य और पश्चिमी भारत के कई बड़े राज्यों में भाजपा की मुख्य विरोधी पार्टी के तौर पर उसे चुनौती देने में समर्थ है, इसलिए मुसलमानों के मतों के संदर्भ में उसे काफ़ी फ़ायदा होता रहा है। लेकिन मुसलमानों के इस असुरक्षा-बोध के कारण उन पर यह आरोप भी लगा है कि वे एक पार्टी को एकमुश्त वोट दे कर वोट बैंक के रूप में व्यवहार करते हैं। कांग्रेस पर यह आरोप लगता रहा है कि वह मुसलमान समुदाय के रूढ़िवादी नेताओं के साथ मिल कर अस्मिता की राजनीति को बढ़ावा देने के लिए भाजपा के ख़तरे का उपयोग करती रही है। भाजपा ने 2014 के लोकसभा चुनावों में नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री का उम्मीदवार बनाया है जिन्हें अन्य समुदायों के कई लोगों की तरह ही बहुत से मुसलमान भी गुजरात में 2002 में हुए अल्पसंख्यक विरोधी हिंसा के लिए ज़िम्मेदार मानते हैं। इस कारण से भी यह सवाल काफ़ी महत्त्वपूर्ण हो गया है कि मुसलमान इन चुनावों में किसे अपना मत देंगे। विशेष रूप से पिछले दो दशकों के मुसलमान मतदान-व्यवहार के अध्ययन से यह बात समझने में मदद मिल सकती है कि आने वाले चुनावों में मुसलमान मतों की क्या भूमिका होगी और क्या इसमें कोई नाटकीय बदलाव होने की भी सम्भावना है? इस प्रक्रिया में यह भी समझने का मौक़ा मिल सकता है कि मुसलमानों के मतदान की संरचना समरूप नहीं है और एक विशिष्ट राजनीतिक पार्टी को ही उसका फ़ायदा नहीं मिलता है।

तालिका-1 में राष्ट्रीय स्तर पर लोकसभा चुनावों में मुसलमानों का मत-व्यवहार दिखाया गया है। इससे यह तथ्य सामने आता है कि अन्य पार्टियों की तुलना में मुसलमानों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को वोट देने की निश्चित प्रवृत्ति रही है। 1996 के बाद से हुए पाँच लोकसभा चुनावों में से हर चुनाव में राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस को 30 से 40 प्रतिशत के बीच मुसलमान मत मिले हैं। अन्य किसी भी दल को कांग्रेस की तुलना में मुसलमानों के तक़रीबन आधे मत ही मिलते दिखाई देते हैं। सिर्फ़ 1998 का चुनाव इसका अपवाद रहा है। इस चुनाव में समाजवादी पार्टी को मुसलमानों के एक चौथाई मत मिले थे। ध्यान रहे कि 1977 और 1989 के चुनावों में मुसलमान मतदान-व्यवहार के बारे में कोई आँकड़ा उपलब्ध नहीं है। इन चुनावों में कांग्रेस को करारी हार का सामना करना पड़ा था, लेकिन आँकड़ों के अभाव में यह अंदाज़ा लगाना मुश्किल है कि मुसलमानों के बीच कांग्रेस विरोधी भावना कितनी गहरी थी। हालाँकि 1977 में थियोडोर पी. जूनियर ने अपने लेखन में स्पष्ट किया था कि मुसलमान आबादी वाले क्षेत्रों में, जहाँ से मुसलमान उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे थे, 1971 की तुलना में 1977 में कांग्रेस के मतों में ख़ासी गिरावट आयी थी। जिन चुनावों के बारे में हमारे पास सर्वेक्षण के आँकड़े उपलब्ध हैं, उनसे यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि चुनाव-दर-चुनाव मुसलमान समुदाय में कांग्रेस के लिए वरीयता क़ायम रही है। कांग्रेस की विरोधी पार्टियाँ ख़ास तौर पर भाजपा इस तथ्य के आधार पर यह दावा करती है कि चुनावों के दौरान मुसलमान समुदाय कांग्रेस के 'वोट बैंक' के रूप में काम करता रहा है। हम देखेंगे कि किस तरह से यह एक समस्याग्रस्त मान्यता है और विभिन्न कारणों से इसे सही नहीं माना जा सकता।

इस लेख में मैंने इन कारणों को एक-एक करके स्पष्ट किया है। पहला, राष्ट्रीय स्तर पर मुसलमानों द्वारा कांग्रेस के समर्थन की दर कभी भी पचास प्रतिशत से ज़्यादा नहीं रही है। कम-से-कम यह बात उन चुनावों के बारे में कही जा सकती है जिसके बारे में विश्वसनीय आँकड़े उपलब्ध हैं। दूसरा, राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस को मिलने वाले कुल मतों की तुलना में मुसलमानों के ज़्यादा मत मिलते रहे हैं। लेकिन यह फ़र्क़ सिर्फ़ सात प्रतिशत से चौदह प्रतिशत ही रहा है। मसलन, 2009 के चुनावों में राष्ट्रीय स्तर पर

कांग्रेस को 29 प्रतिशत मत मिले जबकि मुसलमानों के बीच उसके कुछ मतों का प्रतिशत 38 ही था। इसे कांग्रेस के पक्ष में एकमुश्त मतदान नहीं कहा जा सकता। तीसरा राष्ट्रीय चुनावों में कांग्रेस के प्रति मुसलमानों का समर्थन स्थिर और एकरूप नहीं रहा है। मुसलमान और दलित मतदाता आज़ादी के बाद से ले कर 1977 तक कांग्रेस का मुख्य आधार थे और यह कहा जाता है कि रूढ़िवादी और सेकुलर दोनों ही तरह के मुसलमानों ने कांग्रेस को वोट दिये। 1971 के राष्ट्रीय चुनाव में दस में से छ: मुसलमानों ने कांग्रेस को वोट दिया था, लेकिन तक़रीबन ढाई दशक बाद 1996 तक इस समर्थन में काफ़ी गिरावट आ चुकी थी और इस समय दस में से सिर्फ़ चार मुसलमान ही कांग्रेस को वोट दे रहेथे। इसके बाद भी कमोबेश यही स्थिति क़ायम रही। इसलिए यह कहा जा सकता है कि एक समय मुसलमान मतदाता कांग्रेस को काफ़ी वरीयता देते थे, लेकिन बाद के वर्षों में यह समर्थन कमज़ोर हुआ और यह कमज़ोरी एक स्थायी प्रवृत्ति बन गयी। कोई यह तर्क दे सकता है कि बाबरी मसजिद विध्वंस के बाद के दौर में कांग्रेस के प्रति मुसलमानों के समर्थन में कमी आना स्वाभाविक था क्योंकि 1992 में केंद्र में कांग्रेस की सरकार होने के बावजूद बाबरी मसजिद गिरायी गयी थी और इसके बाद भयंकर दंगे हुए थे। दूसरी ओर, यह कहा जा सकता है कि कांग्रेस के प्रति समर्थन के स्थायीकरण (1996 से कांग्रेस के प्रति मुसलमानों के समर्थन का स्थिर स्तर) का कारण यह है कि मुसलमानों ने यह महसूस कर लिया कि यद्यपि कांग्रेस मुसलमानों के हितों की रक्षा करने में नाकाम रही है, लेकिन फिर भी जहाँ भी इसका भाजपा से सीधा मुक़ाबला है, वहाँ कांग्रेस ही उसे रोकने में समर्थ है। इस तरह मुसलमान मतदाताओं ने कांग्रेस को एक छोटी बुराई के रूप स्वीकार किया। 2002 की गुजरात-हिंसा के कारण भी मुसलमानों में कांग्रेस के प्रति एक निश्चित स्तर तक समर्थन क़ायम रहा। हालाँकि आँकड़ों से यह भी पता चलता है कि 1998, 1999 और 2004 के चुनावों के दौरान मुसलमानों में भाजपा के प्रति समर्थन में वृद्धि हुई। इसका आंशिक कारण यह हो सकता है कि भाजपा की स्थिति केंद्र में शासक की थी। इसी तरह तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की छवि भी इसके लिए ज़िम्मेदार मानी जा सकती है। वाजपेयी को कई लोगों द्वारा, जिनमें कुछ मुसलमान भी शामिल थे, भाजपा के उदारतावादी चेहरे के रूप में देखा जाता था। राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनइएस) आँकड़ों से यह पता चलता है कि 1999 और 2004 के लोकसभा चुनाव में ज़्यादा मुसलमानों ने भाजपा के बजाय प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी को वरीयता दी। 2009 के लोकसभा चुनावों में 2004 की तुलना में भाजपा के प्रति मुसलमानों के समर्थन में तक़रीबन आधी गिरावट आ गयी। सम्भवत: इसका कारण यह था कि लाल कृष्ण आडवाणी भाजपा की ओर से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार

मुसलमानों द्वारा कांग्रेस के समर्थन की दर कभी भी पचास प्रतिशत से ज़्यादा नहीं रही है। ... राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस को मिलने वाले कुल मतों की तुलना में मुसलमानों के ज़्यादा मत मिलते रहे हैं। लेकिन यह फ़र्क़ सिर्फ़ सात प्रतिशत से चौदह प्रतिशत ही रहा है। ... 2009 के चुनावों में राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस को 29 प्रतिशत
मत मिले जबकि मुसलमानों के बीच उसके कुल मतों का प्रतिशत 38 ही था।

थे और रामजन्मभूमि आंदोलन में उनकी भूमिका के कारण मुसलमानों में भाजपा के प्रति समर्थन कम हुआ।

चौथा, यह बात सच है कि मुसलमान समुदाय में कांग्रेस के लिए काफ़ी समर्थन रहा है, लेकिन यह सिर्फ़ इसी समुदाय तक सीमित परिघटना नहीं है। ऊँची जातियों द्वारा भाजपा के समर्थन के संदर्भ में भी यही परिघटना देखी जा सकती है। एक क्षण के लिए हम यह मान लेते हैं कि मुसलमान वोट बैंक हैं, लेकिन इस तर्क के मुताबिक़ ऊँची जातियों को भी वोट बैंक माना जाना चाहिए जो कि एक बड़ी संख्या में भाजपा को वोट देते हैं। 1996 के नैशनल इलेक्शन स्टडीज़ (राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन) के आँकड़ों से यह बात स्पष्ट रूप से सामने आती है (देखें तालिका-2)। इस सर्वेक्षण के अनुसार 1996 में 36 प्रतिशत मुसलमान मतदाताओं ने कांग्रेस को मत दिया था, जबकि इन जातियों के कुल 35 प्रतिशत लोगों ने भाजपा को अपना मत दिया था। 1998 के चुनावों में ऊँची जातियों (ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य और अन्य) के बीच भाजपा का समर्थन बढ़कर 47 प्रतिशत हो गया। इस साल कांग्रेस को मुसलमानों का 32 प्रतिशत मत मिला था। 1999 में भाजपा को ऊँची जातियों के 40 प्रतिशत और कांग्रेस को मुसलमानों के 40 प्रतिशत मत मिले। 2004 के चुनावों में भाजपा को ऊँची जातियों के 35 प्रतिशत मत मिला और कांग्रेस को मुसलमानों का 36 प्रतिशत मत मिला। 1996 के बाद पहली बार 2009 में ऊँची जातियों का भाजपा के प्रति समर्थन 30 प्रतिशत से कम हुआ। इन चुनावों में कांग्रेस को मुसलमानों के 38 प्रतिशत वोट मिले। इन आँकड़ों से

तालिका-1

1971-2009 के बीच राष्ट्रीय चुनावों में मुसलमानों का मतदान-व्यवहार

पार्टी	1971	1996	1998	1999	2004	2009
कांग्रेस	59	36	32	40	36	38
भाजपा/जनसंघ		2	6	7	7	4
बसपा	लागू नहीं	1	2	2	3	6
वाम दल	17	15	7	10	9	11
सपा	लागू नहीं	8	24	10	15	6
अन्य	24	38	29	31	30	35

नोट : 1. सभी आँकड़े प्रतिशत में हैं और पूरे अंकों में है। 2. आँकड़ों को पार्टियों को हर चुनावों में मिलने वाले मतों के आधार मिलाया गया है; 3. 1971 के सैम्पल-आकार 338; 1996 में सैम्पल-आकार 797; 1998 में सैम्पल-आकार 658; 1999 में सैम्पल-आकार 972; 2004 में सैम्पल-आकार 2460; 2009 में सैम्पल-आकार 3705;

स्रोत : लोकनीति, सी.एस.डी.एस. द्वारा 2009, 2004, 1999, 1998, 1996 और 1997 में किये गये राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन; 1971 में वाम दलों का आँकड़ा, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) को मिले मतों को अभिव्यक्त करता है, लेकिन इस वर्ष इन दोनों दलों ने अलग-अलग चुनाव लड़ा था.

स्पष्ट है कि मुसलमानों पर एकमुश्त मतदान करने का आरोप पूरी तरह से ग़लत है और कम-से-कम सिर्फ़ मुसलमानों पर यह आरोप नहीं लगाया जा सकता है।

इस संदर्भ में पाँचवाँ तर्क यह है कि ऊँची जातियों या मुसलमानों के संदर्भ में एकमुश्त मतदान करने का तर्क इसलिए ठीक नहीं है क्योंकि ये दोनों ही समुदाय अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग तरीक़े से मतदान करते रहे हैं। योगेंद्र यादव ने 2004 के चुनावों के संदर्भ में यही दलील दी थी। सी.एस.डी.एस. के नैशनल इलेक्शन स्टडीज़ के आँकड़ों का उपयोग करते हुए यादव ने यह दिखाया

था कि 2004 के चुनावों में विभिन्न राज्यों में राजनीतिक होड़ की प्रकृति के मुताबिक़ मुसलमानों ने अलग-अलग तरीक़े से मतदान किया। राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश और दिल्ली में उन्होंने एकजुट होकर एकमुश्त वोट दिये। उल्लेखनीय है कि इन राज्यों में लम्बे समय से कांग्रेस और भाजपा के बीच दो-ध्रुवीय राजनीति होती रही है। अर्थात् एक सुनिश्चित राजनीतिक संदर्भ में मुसलमानों ने कुछ राज्यों में कांग्रेस को ज़्यादा समर्थन प्रदान किया— ऐसा उन राज्यों में हुआ है जहाँ कांग्रेस और भाजपा के बीच सीधा मुक़ाबला होता रहा है। लेकिन आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और असम जैसे राज्यों में मुसलमानों का कांग्रेस के प्रति समर्थन तुलनात्मक रूप से कम था क्योंकि इन राज्यों में उनके पास अन्य विकल्प भी थे। केरल और पश्चिम बंगाल में भी कांग्रेस को मुसलमानों का कम समर्थन रहा है,

तालिका-2

भाजपा और कांग्रेस के लिए 1996-2009 के बीच क्रमशः
ऊँची जातियों और मुसलमानों का मतदान-व्यवहार

वर्ष	भाजपा के लिए ऊँची जातियों के मत	कांग्रेस के लिए मुसलमानों के मत
2009	29	38
2004	35	36
1999	40	40
1998	47	32
1996	35	36

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत में और पूरे अंकों में हैं। 2. आँकड़ों को पार्टियों को हर चुनावों में मिलने वाले मतों के आधार मिलाया गया है (भारांकित); 3. 2009 में मुसलमानों का सैम्पल-आकार 3705; 2009 में ऊँची जातियों का सैम्पल-आकार 6267; 2004 में मुसलमानों का सैम्पल-आकार 2460; 2004 में ऊँची जातियों का सैम्पल-आकार 3918; 1999 में मुसलमानों का सैम्पल-आकार 972; 1999 में ऊँची जातियों का सैम्पल-आकार 1632; 1998 में मुसलमानों का सैम्पल-आकार 658; 1998 में ऊँची जातियों का सैम्पल-आकार 1071; 1996 में मुसलमानों का सैम्पल-आकार 767; 1996 में ऊँची जातियों का सैम्पल-आकार 1999.
स्रोत : लोकनीति, सी.एस.डी.एस. द्वारा 2009, 2004, 1999, 1998 और 1996 में किया गया राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन.

क्योंकि इन राज्यों में भाजपा एक मजबूत राजनीतिक ताक़त के तौर पर मौजूद नहीं रही है।

2009 के लोकसभा चुनावों में भी जहाँ कांग्रेस और भाजपा के बीच सीधा दो-ध्रुवीय मुक़ाबला था, वहाँ मुसलमान मतदाताओं ने कांग्रेस को समर्थन दिया। नैशनल इलेक्शन स्टडी के आँकड़ों से पता चलता है कि दिल्ली में 78 प्रतिशत, गुजरात में 67 प्रतिशत, उत्तराखण्ड में 69 प्रतिशत और राजस्थान में 82 प्रतिशत मुसलमान मत कांग्रेस को मिले (देखें तालिका-3)। मध्य प्रदेश में मुसलमानों का सैम्पल-आकार काफ़ी छोटा था, इसलिए यहाँ पर मुसलमानों के मतदान-व्यवहार के बारे में निष्कर्ष रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। लेकिन यहाँ भी कांग्रेस को मुसलमानों के मतों का एक बड़ा हिस्सा मिला। उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश में 6.4 प्रतिशत, उत्तराखण्ड में 11.9 प्रतिशत, राजस्थान में 8.5 प्रतिशत, दिल्ली में 11.7 प्रतिशत और गुजरात में 9.1 प्रतिशत मुसलमान हैं (देखें तालिका-4)। स्पष्ट इन राज्यों की जनसंख्या में मुसलमानों का अनुपात राष्ट्रीय औसत 13.4 प्रतिशत से कम है। इसलिए इन राज्यों में मुसलमानों के एकजुट मतदान के किसी भी प्रभाव को बढ़ा-चढ़ा कर देखना ग़लत होगा। इन पाँचों राज्यों में एक भी संसदीय क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ मुसलमान कुल जनसंख्या के

तीस प्रतिशत से ज़्यादा हों, और सिर्फ़ एक संसदीय क्षेत्र ऐसा है, जहाँ वे 20 प्रतिशत से ज़्यादा हैं। जिन राज्यों में मुसलमानों के पास भाजपा का मुक़ाबला करने के लिए कांग्रेस के अलावा कोई अन्य पार्टी विकल्प के तौर पर रही है, वहाँ मुसलमान मतदाताओं ने उस पार्टी को भी काफ़ी तादाद में मतदान किया है। मसलन, असम एक ऐसा राज्य है जहाँ जम्मू और कश्मीर के बाद मुसलमानों की सबसे ज़्यादा जनसंख्या है, वहाँ 2009 के चुनावों में ऑल इण्डिया युनाइटेड डेमॉक्रैटिक फ्रंट (एआईयूडीएफ़) को मुसलमानों के हर 10 मत में से 6 मत मिले। असम की इस पार्टी का गठन 2006 में हुआ था और यह मुसलमानों के हितों के प्रतिनिधित्व का दावा करती है। 2011 में हुए असम विधानसभा चुनावों में एआईयूडीएफ़ कांग्रेस के बाद दूसरे सबसे बड़े दल के रूप में उभर कर सामने आया। दरअसल, इस पार्टी की सफ़लता ने देश के अन्य भागों में भी ऐसे ही दलों के गठन की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया। उत्तर प्रदेश की पीस पार्टी को इसी तरह का एक उदाहरण माना जा सकता है, हालाँकि इसे कोई ख़ास सफ़लता नहीं मिली है। आंध्र प्रदेश में भी 2004 के चुनावों की तुलना में कांग्रेस के मत में गिरावट आयी। यहाँ तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) और मजलिसे इत्तिहादुल मुसलमीन (एमआईएम) जैसी ग़ैर-कांग्रेस और ग़ैर-भाजपा पार्टियों को 55 प्रतिशत मुसलमान मत मिले। बिहार में कांग्रेस को 2004 के चुनावों की तुलना में मुसलमानों के ज़्यादा मत मिले, लेकिन 70 प्रतिशत से भी ज़्यादा मुसलमान मत ग़ैर-कांग्रेस पार्टियों, विशेषकर राष्ट्रीय जनता दल के खाते में गया। महाराष्ट्र में कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस को मुसलमानों के मतों का 55 प्रतिशत मिला। मुसलमानों का शेष मत अन्य दलों के खाते में गया। अकेले कांग्रेस को केवल 29 प्रतिशत वोट मिले। यहाँ तक कि मुसलमानों के प्रति नकारात्मक भावना रखने वाली शिव सेना जैसी पार्टी को भी मुसलमानों के 10 प्रतिशत मत मिले। कर्नाटक इस नियम का एक मात्र अपवाद था, जहाँ कांग्रेस, भाजपा और जनता दल (सेकुलर) के बीच त्रिकोणीय मुक़ाबला होने के बावजूद कांग्रेस को मुसलमानों के हर 10 में से 7 वोट मिले। इसके अलावा, पश्चिम बंगाल और केरल में जहाँ भाजपा का कोई ख़ास प्रभाव नहीं है, वहाँ कांग्रेस-तृणमूल कांग्रेस गठजोड़ और यूडीएफ़ को मुसलमानों के ज़्यादा वोट मिले। पश्चिम बंगाल में कांग्रेस-तृण मूल कांग्रेस गठजोड़ को मुसलमानों के 61 प्रतिशत मत मिले, वहीं केरल में कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त डेमॉक्रैटिक फ्रंट (यूडीएफ़) को मुसलमानों के 58 प्रतिशत वोट मिले। जिन राज्यों में कांग्रेस का भाजपा से सीधा मुक़ाबला हुआ, वहाँ उसे इसकी तुलना में ज़्यादा मत मिले। इसके अलावा, ख़ुद कांग्रेस को पश्चिम बंगाल और केरल में क्रमश: 38 प्रतिशत और 49 प्रतिशत मत मिले। इसके किसी भी लिहाज़ से एकमुश्त मतदान की संज्ञा नहीं दी जा सकती है।

आम तौर पर यह माना जाता है कि भारत में मुसलमान जाति की तरह के दो समुदायों में विभाजित हैं। इन दो समुदायों को अशराफ़ और अजलाफ़ के नाम से जाना जाता है। अशराफ़ के भीतर सैयद, शेख़, मुगल और पठानों को शामिल किया जाता है जो यह दावा करते हैं कि वे भारत में आरम्भिक दौर में आने वाले मुसलमानों और शुरुआत में ऊँची जाति के धर्म परिवर्तन करने वाले लोगों के वंशज हैं। ऊँची जाति के हिंदुओं की तरह ये भी शारीरिक श्रम वाले काम करने को हेय मानते हैं और ख़ुद को उन मुसलमानों से ज़्यादा उच्चतर मानते हैं जिन्हें ये 'अजलाफ़' कहते हैं। अजलाफ़ लोग निम्न हिंदुओं जातियों से धर्म परिवर्तन करने वाले लोग हैं। इसमें बुनकर, नाई, दर्जी आदि जैसी जातियों के मुसलमान आते हैं। जो मुसलमान समूह 'ओबीसी' की श्रेणी में शामिल हैं वे बुनियादी रूप से मुसलमान जनसंख्या के ग़ैर-अशराफ़ तबक़े से ही आते हैं। इस बारे में भी काफ़ी वाद-विवाद होता रहा है कि क्या इन श्रेणियों को विश्लेषण के लिए सार्थक श्रेणियाँ माना जा सकता है। 1967 में इनके बारे में लिखते हुए इम्तियाज़ अहमद ने इनके अस्तित्व को स्वीकार किया। लेकिन उन्होंने यह चेतावनी भी दी कि इन श्रेणियों पर ज़्यादा बल देने से भारत के मुसलमानों के बारे में आधी-अधूरी और विकृत तस्वीर ही सामने आएगी, क्योंकि ख़ुद इन श्रेणियों में बहुत विविधता है। हालाँकि 2006 में भारतीय मुसलमानों

12_shreyas_Layout 1 5/1/2014 6:07 PM Page 153

तालिका-3

2009 के लोकसभा चुनावों में मुख्य राज्यों में सर्वेक्षण के आधार पर मुसलमानों की मतदान-वरीयता

राज्य	कांग्रेस/कांग्रेस+ 2009	भाजपा/भाजपा+ 2009	अन्य	मुसलमानों का सैम्पल
आंध्र प्रदेश	45		55 (तेदेपा-23) एमआईएम-19)	283
असम	32	2	66 (एआईयूडीएफ-61)	307
बिहार	29	भाजपा-2 जद (एकी)-8	61 (राजद-21)	254
दिल्ली	78	15	7	76
गुजरात	67	12	21	105
जम्मू और कश्मीर	कांग्रेस-23 नैशनल कांफ्रेंस-31	1	45 (पीडीपी-32)	254
कर्नाटक	68	11	21 (जद (सेकुलर)-14)	227
केरल	कांग्रेस-49 आईयूएमल-22		29 (माकपा-21, माकपा-5)	152
महाराष्ट्र	कांग्रेस-49 राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी-26	भाजपा-2 शिव सेना-10	जनता दल (सेकुलर)-19, मनसे-4	135
राजस्थान	82	14	4	66
तमिलनाडु	कांग्रेस-25 द्रमुक-22	1	52 अन्ना द्रमुक-19	127
उत्तर प्रदेश	24	3	73 (सपा-30, बसपा-18)	466
उत्तराखण्ड	69	7	24 (बसपा-16, सपा-7)	55
प. बंगाल	कांग्रेस-38 तृण मूल -20	1	41 माकपा-27, माकपा-2	524

नोट : कॉलम 5 को छोड़ कर सभी आँकड़े प्रतिशत और पूर्ण अंकों में हैं; 2. हर राज्य में पार्टियों के वास्तविक मतों के हिस्से के आँकड़े भारांकित हैं; यद्यपि मध्य प्रदेश, झारखण्ड, हरियाणा, त्रिपुरा, मणिपुर और गोवा में मुसलमानों की जनसंख्या पाँच प्रतिशत से ज़्यादा है लेकिन उनके मतदान वरीयता को इस तालिका में शामिल नहीं किया गया है क्योंकि सैम्पल-का आकार बहुत ही छोटा था; 4. अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैण्ड, ओडीशा, पंजाब और सिक्किम को इस तालिका में शामिल नहीं किया है क्योंकि जनसंख्या में मुसलमानों का अनुपात कम होने के कारण इनके सैम्पल का आकार छोटा था.

स्रोत : 2009 में लोकनीति, सी.एस.डी.एस. द्वारा किया गया राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन.

12_shreyas_Layout 1 5/1/2014 6:07 PM Page 154

तालिका-4

राज्यों में मुसलमानों की जनसंख्या

राज्य	जनसंख्या (प्रतिशत में)
सम्पूर्ण भारत	13.4
जम्मू और कश्मीर	67.0
असम	30.9
पश्चिम बंगाल	25.2
केरल	24.7
उत्तर प्रदेश	18.5
बिहार	16.5
झारखण्ड	13.8
कर्नाटक	12.2
उत्तराखण्ड	11.9
दिल्ली	11.7
महाराष्ट्र	10.6
आंध्र प्रदेश	9.2
गुजरात	9.1
मणिपुर	8.8
राजस्थान	8.5
त्रिपुरा	7.6
गोवा	6.8
मध्य प्रदेश	6.4
हरियाणा	5.8
तमिलनाडु	5.6
मेघालय	4.3
ओडिशा	2.1
हिमाचल प्रदेश	2.0
छत्तीसगढ़	2.0
अरुणाचल प्रदेश	1.9
नगालैंड	1.8
पंजाब	1.6
सिक्किम	1.4
मिजोरम	1.1

स्रोत : जनगणना 2001, वेब पता : http://censusindia.gov.in/Census_Data_2001/Census_data_finder/C_Series/Population_by_religious_communities.htm; 27 जनवरी, 2014 को देखा गया.

की स्थिति के अध्ययन के लिए गठित सच्चर आयोग ने आधिकारिक रूप से इन श्रेणियों को स्वीकार किया। 2007 में रंगनाथ मिश्रा आयोग ने भी मुसलमानों में सामाजिक तारतम्यता के अस्तित्व को स्वीकार किया। इसलिए यह देखना प्रासंगिक होगा कि राष्ट्रीय स्तर पर मुसलमान मतदान-व्यवहार को समझने के लिए अशराफ़-अजलाफ़ के बीच का विभाजन कितना उपयुक्त है। क्या अशराफ़ मुसलमानों और अजलाफ़ मुसलमानों के मतदान-व्यवहार में किसी तरह का अंतर है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि ऐसा सिर्फ़ कुछ हद तक ही है और वह भी मुख्य रूप से कांग्रेस के संदर्भ में। सर्वे के आँकड़ों के मुताबिक़ कांग्रेस को अशराफ़ और अजलाफ़ दोनों का ही ज़्यादा समर्थन मिलता रहा है। लेकिन तुलनात्मक रूप से अशराफ़ मुसलमानों ने लगातार कांग्रेस का समर्थन किया है, जबकि अजलाफ़ मुसलमान अन्य विकल्पों की ओर भी गये हैं। हालाँकि हाल के वर्षों में यह अंतर कम हुआ है (देखें तालिका-5)। 1996 और 1999 के चुनावों में कांग्रेस को अजलाफ़ मुसलमानों की तुलना में अशराफ़ मुसलमानों के क्रमश: 9 प्रतिशत और 11 प्रतिशत ज़्यादा मत मिले। लेकिन बाद 2004 और 2009 के चुनावों में इस अंतर में कमी आयी। इन चुनावों में अजलाफ़ मुसलमानों की तुलना में अशराफ़ मुसलमानों ने कांग्रेस को क्रमश: 3 और 2 प्रतिशत ज़्यादा मत दिये। इन समूहों द्वारा भाजपा को मतदान के बारे में भी एक तरह का नियमित पैटर्न सामने आता है। यदि हम मुसलमानों के बीच भाजपा का थोड़ा बहुत जो भी समर्थन है, उस पर अशराफ़ और अजलाफ़ के संदर्भ में विचार करते हैं तो यह बात सामने आती है कि इसे 1996, 1999, और 2004 के चुनावों में अशराफ़ मुसलमानों की तुलना में अजलाफ़ मुसलमानों के थोड़े ज़्यादा मत मिले। हालाँकि 2009 में इसे दोनों समूहों से तक़रीबन बराबर मत मिले। बसपा को भी 2004 के अलावा हर चुनाव में अशराफ़ मुसलमानों से ज़्यादा अजलाफ़ मुसलमानों के मत मिलते रहे हैं। वाम दलों के संदर्भ में कोई स्पष्ट पैटर्न सामने नहीं आया है। 2009 के लोकसभा चुनावों में उन्हें अजलाफ़ मुसलमानों की तुलना में अशराफ़ मुसलमानों के तक़रीबन दोगुने मत मिले। लेकिन 2004 के चुनावों में ठीक इसका उल्टा हुआ था। इसलिए उपरोक्त

12_shreyas_Layout 1 5/1/2014 6:07 PM Page 155

आँकड़ों के अध्ययन के बाद इम्तियाज़ अहमद के विचारों का सहारा लेते हुए यह तर्क दिया जा सकता है कि कम-से-कम राष्ट्रीय स्तर पर इन श्रेणियों की मदद से मुसलमान मतदान-व्यवहार का सार्थक अध्ययन करना कठिन हो सकता है। हालाँकि कुछ राज्यों में ये श्रेणियाँ काफ़ी सार्थक हैं। मसलन, उत्तर प्रदेश के नैशनल इलेक्शन स्टडी-2009 के आँकड़ों से यह बात सामने आती है कि अशराफ़ और अजलाफ़ मुसलमानों के मतदान में स्पष्ट अंतर है। अशराफ़ मुसलमानों ने बड़े अनुपात में कांग्रेस को मत दिया, जबकि अजलाफ़ लोगों ने ज़्यादा बड़े अनुपात में सपा और बसपा को मत दिया।

यद्यपि यह माना जा सकता है कि ऊँची जाति में जन्म लेने के कारण अशराफ़ की आर्थिक स्थिति अजलाफ़ की तुलना में बेहतर होगी, लेकिन 2009 और 2004 में राष्ट्रीय स्तर पर अशराफ़ और अजलाफ़ में ग़रीबों का अनुपात तक़रीबन बराबर ही था। अर्थात् दोनों ही श्रेणियों में ग़रीब लोग हैं। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट के मुताबिक़ 31 प्रतिशत मुसलमान ग़रीब हैं और इसमें अशराफ़ और अजलाफ़ दोनों ही श्रेणियों के मुसलमान शामिल हैं। इसलिए यह ज़्यादा उपयोगी होगा कि मुसलमान मतदाताओं के बीच राजनीतिक विभाजन अच्छी तरह समझने के लिए वर्ग के आधार पर मुसलमानों के मतदान-व्यवहार पर ध्यान दिया जाए। सर्वेक्षण के आँकड़ों से पता चलता है कि 2009 के लोकसभा चुनावों में आर्थिक रूप से सम्पन्न मुसलमानों की तुलना में ग़रीब मुसलमानों ने कांग्रेस को ज़्यादा संख्या में मत दिया। दरअसल, 2009 का चुनाव विभिन्न वर्गों के मुसलमानों के मतदान के स्पष्ट पैटर्न को दिखाता है। मुसलमानों के वर्ग-पदसोपान में नीचे की ओर जाने पर हर स्तर पर कांग्रेस के समर्थन में बढ़ोतरी हुई (तालिका-6)। यह मुसलमान समुदाय का एक अनूठा पैटर्न था जो अन्य धार्मिक समुदायों में सामने नहीं आया, बल्कि अधिकतर मौक़ों पर इसका विपरीत पैटर्न ही उभरा। मसलन, हिंदुओं में ग़रीब हिंदुओं की तुलना में अमीर हिंदू कांग्रेस को ज़्यादा वोट देते हैं। ईसाई लोगों के बारे में भी यही

तालिका-5

अशराफ़ और अजलाफ़ मतदान-व्यवहार , 1996-2009

जाति के अनुसार	कांग्रेस				भाजपा				वामपंथी दल				बसपा				सपा				अन्य			
	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996
अशराफ़	39	37	47	39	5	5	6	2	15	5	9	15	4	4	4	1	6	20	13	7	31	11	24	38
अजलाफ़	37	34	36	30	4	8	7	4	8	11	10	15	7	3	3	3	7	21	8	10	37	12	36	40
ग़ैर-मुसलमान	27	25	27	28	21	24	26	22	7	8	8	9	6	6	5	5	3	4	3	2	36	9	32	34

नोट : 1. सभी आँकड़े प्रतिशत और पूर्ण अंकों में हैं; 2. आँकड़ों को हर वर्ष/चुनावों में पार्टियों को प्राप्त वास्तविक मतों के आधार पर 'प्रतिक्षित' किया गया है; 3. अशराफ़ में सैयद, शेख, मुगल (ख़ान), मुसलमान राजपूत और अन्य ऊँची जाति के मुसलमान शामिल हैं; अजलाफ़ में किसान, व्यापारी, दस्तकार, बुनकर, पूर्व-अछूत और बिना किसी जाति वाले मुसलमान शामिल हैं; 4. 2009 में अशराफ़ लोगों के मतदान-व्यवहार सैम्पल-आकार 1829; 2009 में अजलाफ़ लोगों के मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 1875; 2009 में ग़ैर-मुसलमान मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 25,768; 2004 में अशराफ़ मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 941; 2004 में अजलाफ़ मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 1520; 2004 में ग़ैर मुसलमान मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 20,153; 1999 में अशराफ़ मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 469; 1999 में अजलाफ़ मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 502; 1999 में ग़ैर-मुसलमान मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 7455; 1996 में अशराफ़ मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 469; 1999 में अजलाफ़ मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 502; 1999 में ग़ैर-मुसलमान मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 7455; 1996 में अशराफ़ मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 469; 1996 में अशराफ़ मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 536; 1996 में अजलाफ़ मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 230; ग़ैर-मुसलमान मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार- 7515.

स्रोत : लोकनीति सी.एस.डी.एस. द्वारा 2009, 2004, 1999 और 1996 में किया गया राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन.

12_shreyas_Layout 1 5/1/2014 6:07 PM Page 156

तालिका-5 ए

उत्तर प्रदेश में 2009 के लोकसभा चुनावों में अशराफ़ और अजलाफ़ का मतदान-व्यवहार

2009-लोकसभा चुनाव में मत व्यवहार	कांग्रेस	भाजपा	बसपा	सपा	अन्य
अशराफ	32	3	15	28	22
अजलाफ़	19	3	21	32	25

नोट : 1. सभी आँकड़े प्रतिशत और पूर्ण अंकों में हैं; 2. आँकड़े पार्टियों को प्राप्त वास्तविक मतों के आधार पर समायोजित किये गये हैं; 3. अशराफ़ में सैयद, शेख, मुगल (ख़ान), मुसलमान राजपूत और ऊँची जाति के मुसलमान शामिल हैं; अजलाफ़ में मुसलमान किसान और व्यापारी, दस्तकार, बुनकर, पूर्व-अछूत और बग़ैर किसी जाति वाले मुसलमान शामिल हैं; 4. अशराफ़ मतदान-प्राथमिकता का सैम्पल-आकार 199; अजलाफ़ मतदान-प्राथमिकता का सैम्पल-आकार 267.

बात सच है। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि 1996, 1999 और 2004 के राष्ट्रीय चुनावों में मुसलमानों के मतदान का पैटर्न 2009 से बिल्कुल ही उल्टा है। 1996, 1999 और 2004 में कांग्रेस को निम्न वर्ग के ग़रीब मुसलमानों की तुलना में अमीर और मध्य वर्ग के मुसलमानों को ज़्यादा समर्थन मिला था। 2004 और 2009 में इस प्रवृत्ति में हुए बदलाव की व्याख्या किस तरह की जा सकती है? क्या इसका कारण यह था कि अमीर मुसलमानों की तुलना में ग़रीब मुसलमान लाल कृष्ण आडवाणी के प्रधानमंत्री बनने की सम्भावना से घबराए हुए थे और इसलिए उन्होंने कांग्रेस के पक्ष में ज़्यादा मतदान किया? सर्वेक्षण से ऐसा संकेत मिलता है कि यह बात सच हो सकती है। आँकड़ों से यह पता चलता है कि उच्च वर्ग के छह प्रतिशत मुसलमानों ने आडवाणी के प्रधानमंत्री बनने का समर्थन किया, वहीं सिर्फ़ दो प्रतिशत ग़रीब मुसलमानों ने ऐसी किसी सम्भावना की हिमायत की। भाजपा के प्रति उनकी वरीयता के संदर्भ में भी यही बात सामने आती है। ग़रीब मुसलमानों की तुलना में उच्च वर्ग के दोगुने मुसलमानों ने भाजपा का समर्थन किया। यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि 2009 के पहले के दो राष्ट्रीय चुनावों में ग़रीब मुसलमानों ने अमीर मुसलमानों के अनुपात में ही भाजपा को मत दिया था। सर्वेक्षण से यह रोचक बात भी सामने आती है कि समाजवादी पार्टी को ग़रीब मुसलमानों की तुलना में ज़्यादातर सम्पन्न मुसलमानों का ही समर्थन मिलता रहा है। सिर्फ़ 2004 का चुनाव इसका अपवाद था, जब उसे दोनों के तक़रीबन समान मत मिले थे।

यदि हम पिछले कई वर्षों में शिक्षा के आधार पर मुसलमान मतों का परीक्षण करते हैं, तो यह बात सामने आती है कि शिक्षित मुसलमानों का भाजपा की ओर रुझान रहा है (देखें, तालिका-7)। 1996 के चुनावों के बाद भाजपा को ग़ैर-साक्षर मुसलमानों की तुलना में कॉलेज तक शिक्षा पाए मुसलमानों को ज़्यादा मत मिला है (यह पार्टी के औसत मतदाताओं की पृष्ठभूमि की तरह ही है)। दूसरी तरफ़ वाम दलों को 1999 के अलावा हर चुनाव में ज़्यादा शिक्षित मुसलमानों की तुलना में ऐसे मुसलमान मतदाताओं के वोट ज़्यादा मिले जो या तो निरक्षर हैं या फिर जिन्हें बहुत कम शिक्षा मिली है। कांग्रेस, बसपा और सपा के संदर्भ में शिक्षा के आधार पर मुसलमान मतों का कोई भी स्पष्ट पैटर्न तैयार नहीं किया जा सकता है।

हालाँकि स्थानीयता के आधार पर हम एक स्पष्ट पैटर्न देख सकते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस पार्टी को नियमित रूप से ग्रामीण मुसलमान मतों की तुलना में शहरी मुसलमान मत ज़्यादा संख्या में

12_shreyas_Layout 1 5/1/2014 6:07 PM Page 157

मिलते रहे हैं (देखें तालिका-8)। कहने का तात्पर्य यह है कि 1996 से पार्टी ग्रामीण मुसलमान मतदाताओं की तुलना में ज़्यादा शहरी मुसलमान मतदाताओं को अपने पक्ष में मत देने के लिए प्रेरित करने में सफल हो पायी है। 1996 में ग्रामीण मुसलमान मतदाताओं की तुलना में 5 प्रतिशत ज़्यादा

तालिका-6

1996-2009 में मुसलमानों की वर्ग-आधारित मतदान-प्राथमिकता

वर्ग के आधार पर	कांग्रेस				भाजपा				वामपंथी दल				बसपा				सपा				अन्य			
	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996
उच्च वर्ग	27	36	46	44	6	7	4	6	4	7	11	6	10	7	1	0	14	11	13	19	39	32	25	25
मध्यम वर्ग	36	45	47	39	5	9	8	1	8	8	9	12	8	1	3	1	9	7	10	11	34	30	23	36
निम्न वर्ग	38	33	35	37	4	8	8	4	12	5	9	15	6	4	2	1	6	12	14	7	34	38	32	36
गरीब	39	34	37	33	3	6	5	1	14	11	11	18	4	2	2	1	4	13	6	6	36	34	39	41

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत और पूरे अंकों में हैं; 2. आँकड़े पार्टियों को प्राप्त वास्तविक मतों के आधार पर समायोजित किये गये हैं; 3. 2009 में उच्च वर्ग के मतदान-व्यवहार का सैम्पल-का आकार 161; 2009 में मध्य वर्ग का सैम्पल-आकार 671; 2009 में निम्न वर्ग का सैम्पल-आकार 1396; 2009 में ग़रीब लोगों का सैम्पल-आकार 1477; 2004 में उच्च वर्ग के मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 265; 2004 में मध्य वर्ग का सैम्पल-आकार 309; 2004 में निम्न वर्ग का सैम्पल-आकार 687; 2004 में ग़रीब लोगों का सैम्पल-आकार 1197; 1999 में उच्च वर्ग का सैम्पल-आकार 124; 1999 में मध्य वर्ग का सैम्पल-आकार 233; 1999 में निम्न वर्ग का सैम्पल-आकार 324; 1999 में ग़रीब लोगों का सैम्पल-आकार 287; 1996 में उच्च वर्ग के मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 32; 1996 में मध्य वर्ग का सैम्पल-आकार 177; 1996 में निम्न वर्ग के लिए सैम्पल-आकार 262; 1996 में ग़रीब लोगों का सैम्पल-आकार 249.
स्रोत : लोकनीति, सी.एस.डी.एस. द्वारा 2009, 2004, 1999 और 1996 में किया गया राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन.

शहरी मतदाताओं ने कांग्रेस पार्टी को मत दिया। 1999 और 2004 में यह अंतर बढ़कर 11 प्रतिशत हो गया लेकिन 2009 के चुनाव में यह अंतर फिर से 5 प्रतिशत हो गया। वाम दलों के संबंध में यह प्रवृत्ति बिल्कुल ही विपरीत रूप में सामने आयी है। पिछले दो राष्ट्रीय चुनावों में वाम दलों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में मुसलमानों का समर्थन शहरी क्षेत्रों में मुसलमानों के समर्थन की तुलना में तक़रीबन तीगुना रहा है। भाजपा को ग्रामीण और शहरी मुसलमानों का तक़रीबन बराबर समर्थन मिला है, हालाँकि यह समर्थन शहरी क्षेत्रों में तुलनात्मक रूप से थोड़ा ज़्यादा रहा है।

जेण्डर के आधार पर भी मुसलमान मतदाताओं के मतदान-व्यवहार का एक पैटर्न सामने आता है। मसलन, मुसलमान पुरुषों की तुलना में मुसलमान स्त्रियों के बीच कांग्रेस का समर्थन ज़्यादा रहा है (तालिका-9)। 1996 के अलावा हमेशा ही कांग्रेस को मुसलमान पुरुषों की तुलना में मुसलमान महिलाओं का ज़्यादा समर्थन मिलता रहा है। 1999 में दोनों के समर्थन का अंतर तक़रीबन आठ प्रतिशत

12_shreyas_Layout 1 5/1/2014 6:07 PM Page 158

तालिका-7

1996-2009 के दौरान शिक्षा के आधार पर मुसलमानों की मतदान-प्राथमिकता

शिक्षा के अनुसार	कांग्रेस				भाजपा				वामपंथी दल				बसपा				सपा				अन्य			
	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996
अनपढ़	39	34	42	42	4	7	6	1	12	10	6	17	6	3	2	1	7	16	14	8	32	30	30	31
प्राथमिक शिक्षा प्राप्त	36	42	35	32	3	6	8	3	15	10	11	14	4	3	1	1	5	9	9	11	37	30	36	39
दसवीं तक शिक्षित	38	32	39	34	5	8	5	2	9	6	12	14	6	4	2	0	6	11	10	4	36	39	32	46
महा-विद्यालय शिक्षित	38	32	47	30	5	9	8	5	8	7	11	14	5	1	6	3	8	10	6	13	36	41	22	35

नोट : 1. सभी आँकड़े प्रतिशत और पूर्ण अंकों में हैं; 2. आँकड़े पार्टियों को प्राप्त वास्तविक मतों के आधार पर समायोजित किये गये हैं; 3. 2009 में ग़ैर-साक्षर मुसलमानों के मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 1128; प्राथमिक शिक्षा पाए मुसलमानों का सैम्पल-आकार 987; 2009 में मैट्रिक तक शिक्षा पाए मुसलमानों का सैम्पल-आकार 952; 2009 में कॉलेज तक शिक्षा पाए मुसलमानों का सैम्पल-आकार 602; 2004 में ग़ैर-साक्षर मुसलमानों का सैम्पल-आकार 364; 2004 में प्राथमिक शिक्षा पाए मुसलमानों का सैम्पल-आकार 654; 2004 में मैट्रिक तक शिक्षा पाए मुसलमानों का सैम्पल-आकार 590; 2004 में कॉलेज तक शिक्षा पाए मुसलमानों का सैम्पल-आकार 364; 1999 में ग़ैर-साक्षर मुसलमानों का सैम्पल-आकार 347; 1999 में प्राथमिक शिक्षा पाए मुसलमानों का सैम्पल-आकार 292; 1999 मैट्रिक तक शिक्षा पाए मुसलमानों का सैम्पल-आकार 218; 1999 में कॉलेज तक शिक्षा पाए मुसलमानों का सैम्पल-आकार 109; 1996 में ग़ैर-साक्षर मुसलमानों का सैम्पल-आकार 277; 1996 में प्राथमिक शिक्षा पाए मुसलमानों का सैम्पल-आकार 176; 1996 में मैट्रिक तक शिक्षा पाए मुसलमानों का सैम्पल-आकार 248; 1996 में कॉलेज तक शिक्षा पाए मुसलमानों का सैम्पल-आकार 64.

स्रोत : लोकनीति, सी.एस.डी.एस. द्वारा 2009, 2004, 1999 और 1996 में किया गया राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन.

था। अर्थात् पुरुषों की तुलना में आठ प्रतिशत ज़्यादा महिलाओं ने कांग्रेस को अपना समर्थन दिया था। बाद के लोकसभा चुनावों में यह अंतर दो प्रतिशत का रहा। 1990 के दशक में वाम दलों और सपा को मुसलमान स्त्रियों की तुलना में मुसलमान पुरुषों का ज़्यादा मत मिलता था, लेकिन पिछले लोकसभा चुनावों में इन्हें पुरुषों और स्त्रियों का तक़रीबन बराबर मत मिल रहा है। भाजपा की भी यही स्थिति है।

अंत में यदि हम मुसलमान मतदाताओं की उम्र और उनके मतदान-व्यवहार के बीच संबंधों का अध्ययन करते हैं, तो इस संबंध में कोई स्पष्ट पैटर्न सामने नहीं आता। शायद इस संदर्भ में एक बात यह कही जा सकती है कि 1990 के दशक में जिस सीमा तक युवा मुसलमान मतदाता कांग्रेस का समर्थन करते थे, उसमें पिछले दशक में कमी आयी है (तालिका-10)। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि 2009 के चुनावों में कांग्रेस को युवा मतदाताओं (18-25 वर्ष) की तुलना में बड़ी उम्र वाले मुसलमान मतदाताओं का ज़्यादा समर्थन मिला है। रोचक बात यह है कि 2009 में वोट डालने वाले युवा मतदाता 1984-1991 के बीच पैदा हुए थे। ये उस माहौल में बड़े हुए जब मुसलमानों के बीच

तालिका-8

1996-2009 के दौरान स्थानिकता के आधार पर मुसलमानों की मतदान-प्राथमिकता

रिहाइश के मुताबिक़ क्षेत्र	कांग्रेस				भाजपा				वामपंथी दल				बसपा				सपा				अन्य			
	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996
ग्रामीण	36	32	37	35	4	6	6	2	14	11	13	16	5	4	2	1	6	13	9	6	35	34	33	40
शहरी	41	43	48	40	4	9	7	3	5	4	1	10	6	2	4	1	6	8	13	14	38	34	27	32

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत और पूर्ण अंकों में हैं; 2. आँकड़े पार्टियों को प्राप्त वास्तविक मतों के आधार पर समायोजित किये गये हैं; 3. 2009 में ग्रामीण मुसलमानों के मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 2442; 2009 में शहरी मुसलमानों का सैम्पल-आकार 1264; 2004 में ग्रामीण मुसलमानों का सैम्पल-आकार 1651; 2004 में शहरी मुसलमानों का सैम्पल-आकार 809; 1999 में ग्रामीण मुसलमानों का सैम्पल-आकार 679; 1999 में शहरी मुसलमानों का सैम्पल-आकार 293; 1996 में ग्रामीण मुसलमानों का सैम्पल-आकार 569; 1996 में शहरी मुसलमानों का सैम्पल-आकार 199.

स्रोत : लोकनीति, सी.एस.डी.एस. द्वारा 2009, 2004, 1999 और 1996 में किया गया राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन.

यह भावना थी कि कांग्रेस बाबरी मसजिद को बचाने में और उसके बाद हुए दंगों को रोकने में नाकाम रही। यह वह दौर भी था जब यह भावना भी बलवती होती गयी कि बहुत से निर्दोष युवा मुसलमानों को आतंकी घटनाओं के संदर्भ में गिरफ़्तार किया गया है। शायद इसी कारण इन युवा मतदाताओं ने कांग्रेस को बड़ी तादाद में अपना मत नहीं दिया। लेकिन इस बारे में सुनिश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है। इस संदर्भ एक अन्य ख़ास बात यह है कि वाम दलों को तक़रीबन हमेशा ही युवा मतदाताओं की तुलना में अधेड़ और बुज़ुर्ग मुसलमानों का ज़्यादा समर्थन मिलता रहा है।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि मुसलमानों की मतदान-प्राथमिकताओं के बारे में मुख्य रूप से पाँच तरह के आयाम सामने आते हैं। पहला, राष्ट्रीय स्तर पर मुसलमान मतदाता किसी भी अन्य

तालिका-9

1996-2009 के बीच जेण्डर के आधार पर मुसलमानों की मतदान-प्राथमिकता

जेण्डर	कांग्रेस				भाजपा				वामपंथी दल				बसपा				सपा				अन्य			
	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996
पु.	37	35	36	38	4	7	8	3	11	8	11	17	7	3	3	1	6	12	12	10	35	35	30	31
स्त्री	39	37	44	34	4	8	5	2	12	10	9	13	4	3	1	1	7	11	9	6	34	31	32	44

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत और पूर्ण अंकों में हैं; 2. आँकड़े पार्टियों को प्राप्त वास्तविक मतों के आधार पर समायोजित किये गये हैं; 3. 2009 में मुसलमान पुरुषों के मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 2013; 2009 में मुसलमान स्त्रियों के मतदान-व्यवहार का सैम्पल-आकार 1693; 2004 में मुसलमान पुरुषों का सैम्पल-आकार- 1413; 2004 में मुसलमान महिलाओं का सैम्पल-आकार 1046; 1999 में मुसलमान पुरुषों का सैम्पल-आकार 508; 1999 में मुसलमान महिलाओं को सैम्पल-आकार 465; 1996 मुसलमान पुरुषों का सैम्पल-आकार 354; 1996 में मुसलमान महिलाओं का सैम्पल-आकार 414.

स्रोत : लोकनीति, सी.एस.डी.एस. द्वारा 2009, 2004, 1999 और 1996 में किया गया राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन.

12_shreyas_Layout 1 5/1/2014 6:07 PM Page 160

पार्टी की तुलना में कांग्रेस को ज़्यादा मत देते रहे हैं। लेकिन अब इस पार्टी के समर्थन का यह आधार पहले जैसा नहीं रहा है। दूसरा, पिछले तीस सालों में कांग्रेस के प्रति मुसलमानों का समर्थन 40 प्रतिशत से कम रहा है। इसलिए इस समुदाय द्वारा कांग्रेस के पक्ष में एकमुश्त मतदान की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। तीसरा, यह कहना सही नहीं है कि एक समुदाय के रूप में सिर्फ़ मुसलमान ही बड़ी संख्या में एक पार्टी को वोट देते हैं। सर्वेक्षण के आँकड़ों से यह बात सामने आती है कि ऊँची जाति के मतदाता भी बड़ी तादाद में भाजपा के पक्ष में मतदान करते रहे हैं। कई बार तो वे बड़ी शिद्दत से भाजपा के लिए मतदान करते रहे हैं। मुसलमान अलग-अलग संदर्भों में राज्यों की चुनावी होड़ की प्रकृति के मुताबिक़ अलग-अलग तरीक़े से मतदान करते हैं। जिन राज्यों में कांग्रेस का भाजपा से सीधा मुक़ाबला होता है, वहाँ वह मुसलमानों के वोटों के मामले में फ़ायदे की स्थिति में रही है। जहाँ भी एक विश्वसनीय तीसरा विकल्प सामने आया है, वहाँ मुसलमानों ने उसे भी बड़ी संख्या में वोट दिया है। मुसलमानों के मतदान में सिर्फ़ अस्मिता की ही भूमिका नहीं होती है, बल्कि इसमें अन्य स्थानीय कारक भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

तालिका-10

1996-2000 के दौरान उम्र के हिसाब से मुसलमान मत-प्राथमिकता

उम्र के हिसाब से मुसलमान समूह	कांग्रेस				भाजपा				वामपंथी दल				बसपा			
	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996
18-25	34	30	41	41	4	8	7	1	10	7	7	18	5	5	4	0
26-35	38	39	40	31	4	8	6	3	9	8	8	11	7	2	2	1
36-45	37	37	36	36	4	7	7	2	14	9	15	14	4	3	1	0
46-55	40	37	43	30	4	5	8	4	12	14	9	23	5	2	2	3
56+	39	34	41	40	4	5	6	3	13	8	10	15	5	4	3	0

उम्र के हिसाब से मुसलमान समूह	सपा				अन्य			
	2009	2004	1999	1996	2009	2004	1999	1996
18-25	8	14	12	8	39	36	29	32
26-35	6	13	13	8	36	30	31	46
36-45	6	7	9	6	35	37	32	42
46-55	4	12	9	8	35	30	29	32
56+	6	12	8	8	33	37	32	34

स्रोत : लोकनीति, सी.एस.डी.एस. द्वारा 2009, 2004, 1999 और 1996 में किया गया राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन.

नोट : सभी आँकड़े प्रतिशत और पूर्ण अंकों में हैं; 2. आँकड़े पार्टियों को प्राप्त वास्तविक मतों के आधार पर समायोजित किये गये हैं; 3. 2009 में 18-25 वर्ष के लोगों का सैम्पल-का आकार 630; 2009 में 26-35 वर्ष के लोगों के सैम्पल-का आकार 1102; 2009 में 36-45 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 835; 2009 में 46-55 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 573; 2009 में 56 वर्ष से ऊपर के लोगों का सैम्पल-आकार 565; 2004 में 18-25 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 512; 2004 में 26-35 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 760; 2004 में 36-45 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 541; 2004 में 46-55 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 315; 2004 में 56 वर्ष से ज़्यादा के लोगों सैम्पल-आकार 331; 1999 में 18-25 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 201; 1999 में 26-35 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 301; 1999 में 36-45 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 199; 1999 में 46-55 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 128; 1999 में 56 वर्ष से ज़्यादा के लोगों का सैम्पल-आकार 144; 1996 में 18-25 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 206; 1996 में 26-35 वर्ष के लोगों के बीच का सैम्पल-आकार 234; 1996 में 36-45 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 155; 1996 में 46-55 वर्ष के लोगों का सैम्पल-आकार 73; 1996 में 56 वर्ष के ज़्यादा लोगों का सैम्पल-आकार 101.

12_shreyas_Layout 1 5/1/2014 6:07 PM Page 161

पाँचवाँ, मुसलमानों के बीच अजलाफ़-अशराफ़ जाति विभाजन मुसलमानों के मतदान-व्यवहार को समझने में ज़्यादा मदद नहीं करता है। इसी तरह, उम्र के आधार पर भी इनके मतदान के संदर्भ में कोई ख़ास व्याख्या नहीं की जा सकती है। लेकिन ग्रामीण शहरी विभाजन के आधार पर इन मतदान की व्याख्या की जा सकती है। इसी तरह, मुसलमानों में वर्ग और जेण्डर में मतदान व्यवहार को समझने के मुख्य आधार का काम करते हैं। मुसलमान मतदान से संबंधित महत्त्वपूर्ण मुद्दों को प्रस्तुत करने के बाद यह देखना रोचक होगा कि 2014 के चुनावों में ये आयाम किस तरह की भूमिका निभाते हैं। उत्तर और मध्य भारत के कुछ राज्यों में हाल के समय में हुए विधानसभा चुनावों में यह बात सामने आयी कि कांग्रेस की मुसलमानों पर पकड़ कमज़ोर होने की शुरुआत हो गयी है। सच्चर कमेटी ने मुसलमानों के बीच थोड़ी-बहुत उम्मीद जगाई थी, लेकिन ऐसा लगता है कि वह उम्मीद भी अब ख़त्म होने लगी है। इसके अलावा, ऐसा लगता है कि कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार के ख़िलाफ़ आक्रोश का असर मुसलमान मतदाताओं पर भी पड़ा है। सिर्फ़ अस्मिता और असुरक्षा ही नहीं, बल्कि समुदाय का आर्थिक हित भी मुसलमानों के हितों को प्रभावित कर रहा है और यह 2014 के चुनावों में मुसलमानों के मतदान की दिशा तय करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह देखना भी रोचक होगा कि क्या क्षेत्रीय मुसलमान राजनीतिक शक्तियाँ (असम में एआईयूडीएफ़ और उत्तर प्रदेश में पीस पार्टी) ख़ुद को विश्वसनीय विकल्प के तौर पर पेश कर पाती है या नहीं।

इसके अलावा, आम आदमी पार्टी का उभार भी महत्त्वपूर्ण है। यद्यपि यह पिछले दिल्ली विधानसभा चुनावों में मुसलमानों मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित करने में नाकाम रही, लेकिन यह देखना होगा कि आने वाले लोकसभा चुनावों में यह किस सीमा तक मुसलमान मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित कर पाती है। 76 लोकसभा सीटों पर मुसलमान मतदाता निर्णायक साबित हो सकते हैं (तालिका-11)। ये वे सीट हैं जहाँ मुसलमानों की जनसंख्या 20 प्रतिशत से ज़्यादा है। इनमें से 19 पश्चिम बंगाल में, 18 उत्तर प्रदेश में और 8-8 केरल और असम में हैं। 2009 में इन 76 सीटों में से कांग्रेस ने 28 और भाजपा ने 14 सीटों पर जीत हासिल की थी। इन 76 सीटों में से 39 सीटें ऐसी हैं, जहाँ मुसलमानों की जनसंख्या 20 से 30 प्रतिशत के बीच हैं। 16 लोकसभा सीटों में मुसलमानों की जनसंख्या का अनुपात 30 और 40 प्रतिशत के बीच है। 21 लोकसभा चुनावों में मुसलमानों की जनसंख्या 40 प्रतिशत से ज़्यादा है। यह देखना रोचक होगा कि आने वाले चुनावों में इन सीटों पर मुसलमान किस तरह मतदान करते हैं और मोदी-केंद्रित प्रचार उनके मतदान को किस तरह प्रभावित करता है।

संदर्भ

इक़बाल ए. अंसारी (2006), *पॉलिटिकल रिप्रेज़ेंटेशन ऑफ़ मुस्लिम्स ऑफ़ इण्डिया : 1952-2004*, मानक पब्लिकेशंस, नयी दिल्ली.

इम्तियाज़ अहमद (1967), 'द अशराफ़ ऐंड अजलाफ़ कैटेगरीज़ इन इंडो-मुस्लिम सोसायटी', *इकॉनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली*, खण्ड 2, अंक 19.

ए.के. वर्मा (2006), 'फ़ॉर्मेशन ऑफ़ मुसलमान पॉलिटिकल फ्रंट्स', *इकॉनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली*, खण्ड 47, अंक 43.

एम.एन. श्रीनिवास (1964), 'सोशल स्ट्रक्चर', *द गज़ेटियर ऑफ़ इण्डिया*, खण्ड 1, मैनेजर ऑफ़ पब्लिकेशंस, भारत सरकार, नयी दिल्ली.

क्रिस्टॉफ़ जैफ्रेलॉ, वर्जीनी डुटोया, राधिका कंचन और गायत्री राठौर (2009), 'अंडरस्टैंडिंग मुस्लिम वोट बिहेवियर', सेमिनार, 602.

थियोडोर पी. राइट जूनियर (1977), 'मुस्लिम्स ऐंड द 1977 इण्डियन इलेक्शन : अ वाटरशेड?', *एशियन सर्वे*, खण्ड 17, अंक 12.

तालिका-11

मुसलमान जनसंख्या के संकेंद्रण के आधार पर 2009 लोकसभा चुनावों के नतीजे

आबादी	कुल सीटें	मतदान	कांग्रेस		भाजपा		वाम-दल		बसपा		सपा		अन्य	
			सीट	वोट	सीट	वोट	सीट	वोट	सीट	वोट	सीट	वोट	सीट	वोट
10 % से कम	305	58.9	121	30.8	63	19.2	9	4.3	7	5.3	14	2.7	91	37.7
10.1 % से 20 %	162	55.5	57	26.6	39	19.6	9	8.7	9	7.2	6	4.4	42	33.5
20.1 % से 30 %	39	57.9	12	20.7	11	19.6	4	14.8	4	10.4	2	5.5	6	29.0
30.1 % से 40 %	16	66.4	5	21.0	3	16.4	2	17.6	1	7.3	0	4.2	5	33.5
40.1 % से 50 %	9	69.9	5	34.3	0	8.2	0	26.5	0	2.0	1	3.6	3	25.4
50.1 % और ऊपर	12	64.8	6	32.3	0	2.9	0	22.5	0	0.7	0	0.2	6	41.4
कुल	543	58.2	206	28.6	116	18.8	24	7.5	21	6.2	23	3.4	153	35.5

पी.एस. कृष्णन (2012), 'रिजर्वेशन फ़ॉर मुस्लिम्स इन इण्डिया– अ स्टेप फ़ॉर इनक्लूज़िव डिवेलपमेंट', *इकॉनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली,* 18 अगस्त.

मिर्जा असमेर बेग (2012), 'द मुसलमान पॉलिटिकल पार्टीज़ इन उत्तर प्रदेश ऐंड असम', खण्ड 47, अंक 43.

मोहम्मद संजीर आलम (2009), 'विदर मुसलमान पॉलिटिक्स?', *इकॉनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली,* खण्ड 44, अंक 39.

योगेंद्र यादव (2009), 'फ़ाइव मिथ्स अबाउट मुसलमान वोट', द हिंदू, 20 अप्रैल, वेब पता http://www.hindu.com/2009/04/20/stories/2009042053731200.htm 3 फ़रवरी, 2014 को पढ़ा गया.

रजिंदर सच्चर (2006), 'सोशल, इकॉनॉमिक ऐंड ऐजुकेशनल स्टेटस ऑफ़ मुस्लिम कम्युनिटी.

राजीव भार्गव (2007), 'ऑन परसिस्टेंट पॉलिटिकल अंडर-रिप्रेज़ेंटेशन ऑफ़ मुसलमान इन इण्डिया', लॉ ऐंड एथिक्स ऑफ़ ह्युमन राइट्स, खण्ड 1, अंक 1, द बर्कले इलेक्ट्रॉनिक प्रेस.

हिलाल अहमद (2008), 'डिबेटिंग मुसलमान पॉलिटिकल रिपज़ेंटेशन', सेमिनार, 586.